

समावेशी शिक्षा में शिक्षक दक्षता और विद्यार्थी सहभागिता के अंतर्संबंध का अध्ययन

डॉ. मंजू साहू

सह-प्राध्यापक

एम.जे. कॉलेज

कोहका, भिलाई, छत्तीसगढ़

<http://www.gjirp.org/> || Vol. 2 No. 3 (2026): Special August Issue

Date of Submission: 15-07-2026

Date of Acceptance: 31-07-2026

Date of Publication: 20-08-2026

सारांश— समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता केवल विविध क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को एक ही कक्षा में स्थान देने पर नहीं, बल्कि शिक्षक की विविध अधिगम आवश्यकताओं के प्रति व्यावसायिक, शैक्षणिक और सामाजिक प्रत्युत्तरशीलता पर निर्भर करती है। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षक दक्षता और विद्यार्थी सहभागिता के मध्य अंतर्संबंध का बहुआयामी विश्लेषण करने के उद्देश्य से प्रस्तावित किया गया है। अध्ययन में शिक्षक दक्षता को शिक्षण-अनुकूलन, सहयोगात्मक क्षमता, सहायक प्रौद्योगिकी उपयोग, व्यवहार प्रबंधन तथा सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता के संयुक्त स्वरूप के रूप में देखा गया है। विद्यार्थी सहभागिता को केवल कक्षा में उपस्थिति या गतिविधियों में भागीदारी तक सीमित न रखकर व्यवहारिक, भावात्मक और संज्ञानात्मक सहभागिता के रूप में अवधारित किया गया है। पूर्ववर्ती अध्ययनों में शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता तथा समावेशी दृष्टिकोण का पर्याप्त अध्ययन हुआ है, किंतु वास्तविक शिक्षक दक्षता और विद्यार्थी सहभागिता के बहुस्तरीय संबंध पर तुलनात्मक प्रमाण अपेक्षाकृत सीमित हैं। प्रस्तावित शोध इसी अंतर को संबोधित करते हुए यह परीक्षण करता है कि शिक्षक की कौन-सी दक्षताएँ विविध अधिगम आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता को सर्वाधिक प्रभावित करती हैं। अध्ययन में तकनीकी रूप से समर्थित शैक्षणिक अभिलेखों और संरचित प्रेक्षण के संयोजन द्वारा सहभागिता के सूक्ष्म प्रतिरूपों को पहचानने की रूपरेखा विकसित की गई है। यह शोध समावेशी विद्यालयों में शिक्षक प्रशिक्षण, वैयक्तिकृत शिक्षण, सहायक प्रौद्योगिकी और सहभागितामूलक कक्षा-व्यवस्था के लिए प्रमाण-आधारित दिशा प्रदान करने का प्रयास करता है।

प्रमुख शब्द— समावेशी शिक्षा, शिक्षक दक्षता, विद्यार्थी सहभागिता, शिक्षण-अनुकूलन, सहायक प्रौद्योगिकी, सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता

परिचय

शिक्षा में समानता का वास्तविक अर्थ प्रत्येक विद्यार्थी को समान शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना मात्र नहीं है, बल्कि ऐसी शैक्षणिक परिस्थितियाँ निर्मित करना है जिनमें व्यक्तिगत भिन्नताओं के बावजूद प्रत्येक विद्यार्थी सीखने, संवाद करने, निर्णय लेने और कक्षा समुदाय का सक्रिय सदस्य बनने का अवसर प्राप्त कर सके। इसी आधार पर समावेशी शिक्षा आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था का एक प्रमुख सिद्धांत बन चुकी है। इसमें शारीरिक, बौद्धिक, संवेदनात्मक, सामाजिक, भाषायी, सांस्कृतिक तथा अधिगम-संबंधी विविधताओं वाले विद्यार्थियों को पृथक् करने के स्थान पर सामान्य शैक्षणिक व्यवस्था में आवश्यक सहयोग के साथ शिक्षित करने पर बल दिया जाता है।

समावेशन की सफलता का निर्धारण केवल नीति, विद्यालयी प्रवेश या भौतिक उपलब्धता से नहीं किया जा सकता। किसी विद्यार्थी का विद्यालय में उपस्थित होना और उसका वास्तव में सीखने की प्रक्रिया में सम्मिलित होना दो अलग अवस्थाएँ हैं। विद्यार्थी कक्षा में उपस्थित हो सकता है, परंतु यदि वह प्रश्न पूछने में संकोच करता है, समूह गतिविधि से अलग रहता है, कठिन कार्यों को शीघ्र छोड़ देता है अथवा स्वयं को कक्षा समुदाय का स्वीकार्य सदस्य नहीं मानता, तो औपचारिक समावेशन के बावजूद शैक्षणिक समावेशन अधूरा रहता है। इसी कारण विद्यार्थी सहभागिता समावेशी शिक्षा की गुणवत्ता को समझने वाला एक महत्वपूर्ण संकेतक बनती है।

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष द्वारा प्रस्तुत हाल के वैश्विक साक्ष्य यह इंगित करते हैं कि दिव्यांगता और अधिगम भिन्नताओं वाले बच्चों के लिए केवल

विद्यालय तक पहुँच पर्याप्त नहीं है; शिक्षा-प्रणालियों को विद्यार्थी की आवश्यकताओं की पहचान, शिक्षकों के सहयोग, पर्याप्त संसाधनों और सहभागिता की बाधाओं के निराकरण को साथ लेकर चलना आवश्यक है। वर्ष २०२६ के बहुदेशीय प्रतिवेदन में भी समावेशी व्यवस्था के लिए विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक और नीति-स्तर के परस्पर समन्वय को महत्वपूर्ण माना गया है।

समावेशी कक्षा में शिक्षक की भूमिका विशेष रूप से जटिल होती है। शिक्षक को एक ही शिक्षण वातावरण में भिन्न अधिगम गति, भाषा, क्षमता, व्यवहार, रुचि, संवेदी आवश्यकता और सामाजिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के साथ कार्य करना पड़ता है। परिणामस्वरूप शिक्षक दक्षता को केवल विषय-ज्ञान अथवा सामान्य कक्षा प्रबंधन से नहीं समझा जा सकता। प्रभावी समावेशी शिक्षक को शिक्षण-विधि में परिवर्तन करने, कठिन विषयवस्तु को विभिन्न स्वरूपों में प्रस्तुत करने, वैकल्पिक मूल्यांकन अपनाने, सहायक उपकरणों का उपयोग करने, सहपाठी सहयोग विकसित करने, परिवार एवं विशेषज्ञों से समन्वय स्थापित करने और विद्यार्थी के भावनात्मक संकेतों को पहचानने जैसी क्षमताओं की आवश्यकता होती है।



Fig. 1: समावेशी कक्षाओं की सशक्त नींव: शिक्षक दक्षता से सक्रिय विद्यार्थी सहभागिता

समावेशी शिक्षण पर उपलब्ध साक्ष्य दर्शाते हैं कि उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाले शिक्षक विद्यार्थियों की सफलता, पहुँच और आत्मविश्वास को केंद्र में रखने वाली शिक्षण रणनीतियों की ओर अधिक उन्मुख होते हैं, जबकि निम्न आत्म-प्रभावकारिता वाले शिक्षक व्यवहार नियंत्रण तथा विद्यार्थी भिन्नताओं को समस्या के रूप में देखने की ओर अधिक झुक सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि समावेशी शिक्षा के विषय में सकारात्मक विचार होना और उन विचारों को प्रभावी व्यवहार में रूपांतरित कर पाना समान नहीं हैं।

यहीं शिक्षक दक्षता और विद्यार्थी सहभागिता का अंतर्संबंध विशेष महत्व ग्रहण करता है। उदाहरणतः कोई शिक्षक यदि पाठ्यसामग्री का विभेदीकरण तो करता है, परंतु विद्यार्थी को निर्णय लेने का अवसर नहीं देता, तो संज्ञानात्मक पहुँच बढ़ने के बावजूद भावात्मक सहभागिता कमजोर रह सकती है। दूसरी ओर, शिक्षक यदि अत्यधिक सहानुभूतिपूर्ण है लेकिन विविध अधिगम आवश्यकताओं के लिए शिक्षण सामग्री को अनुकूलित करने में सक्षम नहीं है, तो विद्यार्थी का सामाजिक जुड़ाव अच्छा होने के बावजूद सीखने की सक्रियता सीमित रह सकती है। अतः समावेशी शिक्षण के प्रभाव को समझने के लिए शिक्षक दक्षता के अलग-अलग आयामों को विद्यार्थी सहभागिता के विभिन्न रूपों से जोड़कर देखना आवश्यक है।

वर्ष २०२१ के बाद समावेशी शिक्षा की चर्चा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। महामारी के पश्चात शिक्षा में अंकीय संसाधनों, मिश्रित शिक्षण, दूरस्थ सहायता और वैयक्तिकृत शिक्षण साधनों का उपयोग बढ़ा। इसके फलस्वरूप शिक्षक दक्षता में अंकीय पहुँच और सहायक प्रौद्योगिकी के उपयोग का महत्व भी बढ़ गया। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष के समावेशी शिक्षा संबंधी कार्यों में शिक्षक क्षमता-विकास, प्रणालीगत सहयोग तथा हाशिये पर स्थित बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से जोड़ने पर विशेष बल दिया गया है।

ऐसी परिस्थितियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण प्रणालियाँ भी समावेशी कक्षा के लिए संभावित साधन के रूप में उभरती हैं। विद्यार्थी की अधिगम गति, कार्य पूर्ण करने में लगने वाला समय, प्रतिक्रिया प्रतिरूप और त्रुटियों की प्रकृति जैसे संकेतों के आधार पर शिक्षण सामग्री का स्तर बदलना संभव है। इसी प्रकार वाक्-पाठ परिवर्तन, पाठ-वाक् परिवर्तन, स्वचालित उपशीर्षक, वैकल्पिक प्रस्तुतीकरण, भाषा सहायता तथा अनुकूलित अभ्यास जैसे साधन विशेष अधिगम आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए सहभागिता के नए अवसर उत्पन्न कर सकते हैं। किंतु तकनीक तभी समावेशी सिद्ध हो सकती है जब शिक्षक उसका उद्देश्यपूर्ण, नैतिक और विद्यार्थी-केंद्रित उपयोग करने में सक्षम हो। इसलिए तकनीकी उपलब्धता को शिक्षक दक्षता का विकल्प नहीं, बल्कि उसकी विस्तारित क्षमता के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

१.१ शोध-अंतर

समावेशी शिक्षा पर उपलब्ध शोध में शिक्षक के दृष्टिकोण, आत्म-प्रभावकारिता, प्रशिक्षण, कार्य-अभिप्रेरणा तथा समावेशन के प्रति मान्यताओं का व्यापक अध्ययन किया गया है। वर्ष २०२२ में प्रकाशित एक विस्तृत संश्लेषण में शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता और समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया, जबकि एक अन्य व्यवस्थित समीक्षा ने प्रशिक्षण, अनुभव, संदर्भ तथा नीति-ज्ञान जैसे तत्वों को शिक्षक की समावेशी आत्म-प्रभावकारिता से संबंधित बताया।

इसके बावजूद तीन प्रमुख कमियाँ दिखाई देती हैं। प्रथम, अधिकांश अध्ययनों में शिक्षक की क्षमता का आकलन शिक्षक द्वारा स्वयं व्यक्त आत्मविश्वास या दृष्टिकोण के आधार पर किया गया है; वास्तविक कक्षा-

अनुकूलन और विद्यार्थी प्रतिक्रिया को समान रूप से सम्मिलित करने वाले अध्ययन कम हैं। द्वितीय, विद्यार्थी सहभागिता को अनेक अध्ययनों में एकल परिणाम की तरह देखा गया है, जबकि व्यवहारिक, भावात्मक और संज्ञानात्मक सहभागिता एक-दूसरे से भिन्न हो सकती हैं। तृतीय, समावेशी शिक्षक दक्षता के पारंपरिक आयामों के साथ सहायक अंकीय प्रौद्योगिकी के सार्थक उपयोग को सम्मिलित करते हुए यह स्पष्ट करने वाले प्रमाण सीमित हैं कि कौन-सा दक्षता आयाम किस प्रकार की सहभागिता को अधिक प्रभावित करता है।

प्रस्तुत शोध का विशिष्ट योगदान इसी अंतर से उत्पन्न होता है। इसमें शिक्षक दक्षता को एक संयुक्त अंक के रूप में देखने के बजाय पाँच परस्पर संबंधित आयामों—शिक्षण-अनुकूलन, सहयोगात्मक दक्षता, व्यवहारिक प्रत्युत्तरशीलता, सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता तथा सहायक प्रौद्योगिकी दक्षता—में विभाजित करने का प्रस्ताव है। साथ ही विद्यार्थी सहभागिता को व्यवहारिक, संज्ञानात्मक और भावात्मक स्तर पर मापा जाएगा। इस प्रकार अध्ययन का केंद्रीय प्रश्न केवल यह नहीं है कि सक्षम शिक्षक के विद्यार्थी अधिक सहभागी होते हैं या नहीं, बल्कि यह है कि **शिक्षक की कौन-सी दक्षता विद्यार्थी सहभागिता के किस आयाम को, किन परिस्थितियों में और कितनी सीमा तक प्रभावित करती है।**

१.२ अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य समावेशी शैक्षणिक वातावरण में शिक्षक दक्षता और विद्यार्थी सहभागिता के बहुआयामी अंतर्संबंध का परीक्षण करना है। इसके अंतर्गत शिक्षक की शिक्षण-अनुकूलन क्षमता, व्यवहार प्रबंधन, सहकारी कार्यक्षमता, सामाजिक-भावनात्मक प्रत्युत्तरशीलता तथा सहायक प्रौद्योगिकी के उपयोग की दक्षता का पृथक मूल्यांकन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त यह निर्धारित करने का प्रयास किया जाएगा कि इन आयामों का व्यवहारिक, संज्ञानात्मक और भावात्मक विद्यार्थी सहभागिता के साथ किस प्रकार का संबंध है।

अध्ययन यह भी जाँचेगा कि क्या शिक्षक की उच्च समावेशी दक्षता विविध अधिगम आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों और सामान्यतः विकसित विद्यार्थियों के मध्य सहभागिता-अंतर को कम करती है। एक अन्य उद्देश्य यह पहचानना है कि किस प्रकार की शिक्षक दक्षता सहभागिता में कमी की पूर्व पहचान के लिए सबसे उपयोगी संकेत प्रदान करती है। इस उद्देश्य के कारण शोध पारंपरिक सहसंबंधात्मक अध्ययन से आगे बढ़कर आँकड़ा-आधारित पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण की दिशा ग्रहण करता है।

साहित्य समीक्षा

२.१ समावेशी शिक्षा की परिवर्तित अवधारणा

समावेशी शिक्षा का प्रारंभिक विमर्श मुख्यतः विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को सामान्य विद्यालयों में सम्मिलित करने पर केंद्रित था। वर्तमान दृष्टिकोण इससे अधिक व्यापक है। अब समावेशन को ऐसी व्यवस्था के रूप में देखा जाता है जिसमें विद्यार्थी की व्यक्तिगत

विशेषताओं के कारण उसके सीखने और सहभागिता करने के अवसर सीमित न हों। इसमें दिव्यांगता के साथ भाषा, लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, प्रवासन, सांस्कृतिक विविधता और अधिगम गति जैसी अनेक परिस्थितियाँ शामिल होती हैं।

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष ने समावेशी शिक्षा में हाशिये पर स्थित बच्चों, दिव्यांग बच्चों, विस्थापित बच्चों तथा निर्धन परिवारों के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच के साथ सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की आवश्यकता रेखांकित की है। हाल के कार्यक्रमों में नीति के साथ विद्यालयी क्रियान्वयन, शिक्षक प्रशिक्षण, समुदाय सहयोग तथा आँकड़ा-आधारित निगरानी को भी महत्वपूर्ण माना गया है।

यह परिवर्तन इस धारणा को चुनौती देता है कि समस्या विद्यार्थी के भीतर स्थित है। आधुनिक समावेशी दृष्टिकोण में प्रश्न यह नहीं होना चाहिए कि विद्यार्थी सामान्य व्यवस्था में स्वयं को कितना समायोजित कर सकता है, बल्कि यह होना चाहिए कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थी की विविध आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को कितनी प्रभावशीलता से परिवर्तित कर सकता है। इस परिवर्तन का सबसे सक्रिय वाहक शिक्षक है।

२.२ शिक्षक दक्षता और समावेशी व्यवहार

शिक्षक दक्षता में ज्ञान, कौशल, विश्वास, निर्णय-क्षमता और परिस्थिति के अनुसार व्यवहार परिवर्तन की क्षमता शामिल होती है। समावेशी संदर्भ में यह अवधारणा और अधिक विस्तृत हो जाती है। शिक्षक को यह पहचानना होता है कि एक ही शैक्षणिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए सभी विद्यार्थियों को समान गतिविधि अथवा समान प्रस्तुतीकरण देना आवश्यक नहीं है।

बुडकॉक, शर्मा, सुब्बन और हिचेस के अध्ययन में यह पाया गया कि उच्च तथा निम्न आत्म-प्रभावकारिता वाले शिक्षक समावेशी शिक्षा की अवधारणा को लगभग समान रूप से समझ सकते हैं, किंतु उनकी वास्तविक शिक्षण प्रथाओं में महत्वपूर्ण अंतर हो सकता है। उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाले शिक्षक सफलता, पहुँच और विद्यार्थी आत्मविश्वास को अधिक महत्व देते पाए गए। यह निष्कर्ष इस बात को पुष्ट करता है कि केवल समावेशी विचारधारा के प्रति सहमति पर्याप्त नहीं है; उसे व्यवहार में बदलने वाली व्यावसायिक दक्षता आवश्यक है।

रे, शर्मा और सुब्बन द्वारा की गई व्यवस्थित समीक्षा ने भी संकेत दिया कि शिक्षक की समावेशी आत्म-प्रभावकारिता कई कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें प्रशिक्षण, अनुभव, संदर्भ और समावेशी नीतियों का ज्ञान सम्मिलित हैं। यह परिणाम शिक्षक विकास को एक बार पूर्ण होने वाली प्रक्रिया मानने के स्थान पर निरंतर व्यावसायिक अधिगम की आवश्यकता स्थापित करता है।

२.३ शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता, दृष्टिकोण और प्रशिक्षण

शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता से तात्पर्य शिक्षक के उस विश्वास से है कि वह कठिन अथवा विविध शिक्षण परिस्थितियों में प्रभावी शैक्षणिक कार्य कर सकता है। समावेशी कक्षा में यह विश्वास विशेष महत्व रखता है

क्योंकि शिक्षक को अनिश्चित और विविध परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

यादा, लेस्किनेन, सावोलाइनेन और श्वाब द्वारा विभिन्न नमूनों को सम्मिलित कर किए गए विश्लेषण में शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता और समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया। इसी प्रकार शिक्षक मान्यताओं पर वर्ष २०२२ में प्रकाशित व्यापक विश्लेषण ने यह दर्शाया कि संज्ञानात्मक दृष्टिकोण, भावात्मक प्रतिक्रिया और आत्म-प्रभावकारिता मिलकर समावेशन संबंधी शिक्षक व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं।

हालाँकि आत्म-प्रभावकारिता को वास्तविक दक्षता का पूर्ण पर्याय नहीं माना जा सकता। कोई शिक्षक स्वयं को सक्षम मान सकता है, परंतु कक्षा प्रेक्षण में उसकी शिक्षण-विविधता सीमित हो सकती है। इसके विपरीत कुछ शिक्षक अपनी क्षमता का कम मूल्यांकन करने के बावजूद व्यवहार में अत्यंत प्रभावी हो सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी कारण स्व-प्रतिवेदन को कक्षा व्यवहार और विद्यार्थी सहभागिता संकेतकों के साथ संयोजित करने का प्रस्ताव करता है।

२.४ विद्यार्थी सहभागिता का बहुआयामी स्वरूप

विद्यार्थी सहभागिता को केवल उत्तर देने, हाथ उठाने अथवा गतिविधियों में शामिल होने तक सीमित करना उचित नहीं है। व्यावहारिक सहभागिता में उपस्थिति, कार्य-पूर्णता, निर्देशों का पालन और गतिविधियों में प्रत्यक्ष भागीदारी सम्मिलित होती है। भावात्मक सहभागिता विद्यार्थी की रुचि, अपनत्व, सुरक्षा, आनंद तथा विद्यालय के प्रति सकारात्मक भाव से जुड़ी होती है। संज्ञानात्मक सहभागिता उस मानसिक निवेश को दर्शाती है जिसके माध्यम से विद्यार्थी कठिन विषयों को समझने, समस्या समाधान करने, वैकल्पिक रणनीति अपनाने और आत्म-नियंत्रित अधिगम में संलग्न होता है।

समावेशी संदर्भ में इन तीनों आयामों का अलग-अलग अध्ययन आवश्यक है। उदाहरणतः श्रवण संबंधी कठिनाई वाला विद्यार्थी दृश्य सामग्री उपलब्ध होने पर कार्य पूरा कर सकता है, जिससे व्यावहारिक सहभागिता अच्छी दिखाई दे सकती है, किंतु समूह संवाद में बाधाओं के कारण भावात्मक सहभागिता कम रह सकती है। उसी प्रकार किसी विद्यार्थी की सामाजिक सहभागिता मजबूत हो सकती है, परंतु यदि कार्य उसकी क्षमता के अनुरूप अनुकूलित नहीं है, तो उसकी संज्ञानात्मक सक्रियता कम हो सकती है।

अतः केवल समग्र सहभागिता अंक शिक्षक दक्षता के वास्तविक प्रभाव को छिपा सकता है। प्रस्तुत शोध इसी समस्या को दूर करते हुए सहभागिता के अलग-अलग आयामों का पृथक विश्लेषण प्रस्तावित करता है।

२.५ सहयोगात्मक दक्षता और सहभागिता

समावेशी शिक्षण व्यक्तिगत शिक्षक की पृथक गतिविधि नहीं है। इसमें विशेष शिक्षक, सामान्य शिक्षक, अभिभावक, परामर्शदाता, विद्यालय

नेतृत्व और आवश्यकता के अनुसार चिकित्सकीय अथवा पुनर्वास विशेषज्ञों के बीच समन्वय आवश्यक हो सकता है। चीन में समावेशी शिक्षकों पर किए गए एक अध्ययन में समावेशी शिक्षण, सहयोग तथा व्यवहार प्रबंधन से संबंधित आत्म-प्रभावकारिता और शिक्षक कार्य-अभिप्रेरणा के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया गया।

सहयोगात्मक दक्षता विद्यार्थी सहभागिता को अप्रत्यक्ष रूप से भी प्रभावित कर सकती है। जब शिक्षक परिवार से विद्यार्थी की संचार शैली, व्यावहारिक संकेत, रुचि और कठिनाइयों को समझता है, तो वह शिक्षण रणनीतियों को अधिक उपयुक्त ढंग से अनुकूलित कर सकता है। इसी प्रकार सहकर्मी शिक्षकों और विशेषज्ञों से सहयोग जटिल परिस्थितियों के समाधान में सहायक हो सकता है।

२.६ सहायक प्रौद्योगिकी और नवीन शिक्षक दक्षता

वर्तमान समावेशी कक्षा में प्रौद्योगिकी दक्षता को अलग रखकर शिक्षक दक्षता की पूर्ण व्याख्या कठिन है। दृश्य संकेत, वाक्-आधारित सामग्री, स्वचालित पाठ रूपांतरण, भाषा सहायता, वैकल्पिक अभ्यास, अनुकूलनीय पाठ्यसामग्री तथा विद्यार्थी प्रगति का सतत अभिलेखन शिक्षण को अधिक पहुँचयोग्य बना सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियाँ विद्यार्थी के उत्तरों, त्रुटियों और सीखने की गति में बनने वाले प्रतिरूपों की पहचान कर शिक्षक को अतिरिक्त संकेत प्रदान कर सकती हैं। किंतु इन प्रणालियों पर अत्यधिक निर्भरता से विद्यार्थी की निजता, आँकड़ों की सुरक्षा, पक्षपात तथा मानवीय निर्णय में कमी जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। अतः तकनीकी दक्षता का आशय केवल उपकरण संचालित करना नहीं, बल्कि यह समझना भी है कि किस विद्यार्थी के लिए, किस उद्देश्य से और किस सीमा तक किसी प्रौद्योगिकी का उपयोग उचित है।

२.७ सामाजिक-भावनात्मक दक्षता और कक्षा में अपनत्व

समावेशी शिक्षा का एक कम मापा गया पक्ष विद्यार्थी का कक्षा में अपनत्व है। यदि विद्यार्थी स्वयं को निरंतर सहायता प्राप्त करने वाला, अन्य विद्यार्थियों से भिन्न अथवा शिक्षक के लिए अतिरिक्त बोझ के रूप में अनुभव करता है, तो समावेशन की औपचारिक व्यवस्था भी उसकी भावात्मक सहभागिता को कमजोर कर सकती है।

सामाजिक-भावनात्मक रूप से दक्ष शिक्षक सहायता देते समय विद्यार्थी की गरिमा बनाए रखता है, तुलना करने से बचता है, सहयोगात्मक समूह बनाता है और त्रुटि को विफलता के बजाय सीखने का स्वाभाविक भाग प्रस्तुत करता है। ऐसी कक्षा में विद्यार्थी प्रश्न पूछने, कठिन कार्य करने और सहपाठियों के साथ संवाद करने में अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित अनुभव कर सकता है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन सामाजिक-भावनात्मक प्रत्युत्तरशीलता को शिक्षक दक्षता के स्वतंत्र आयाम के रूप में सम्मिलित करता है।

प्रस्तावित कार्यविधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए मिश्रित मात्रात्मक-विश्लेषणात्मक अनुसंधान रूपरेखा प्रस्तावित की गई है, जिसमें शिक्षक दक्षता और विद्यार्थी सहभागिता को एक-दूसरे से स्वतंत्र संकेतकों के रूप में नहीं, बल्कि बहुस्तरीय शैक्षणिक तंत्र के रूप में परखा जाएगा। अध्ययन का केंद्रीय उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि शिक्षक की समावेशी दक्षता के कौन-से आयाम विद्यार्थियों की व्यवहारिक, भावात्मक और संज्ञानात्मक सहभागिता को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं तथा क्या इन आयामों के संयुक्त प्रभाव से कम सहभागिता वाले विद्यार्थियों की पूर्व पहचान की जा सकती है।

अनुसंधान के लिए माध्यमिक स्तर के समावेशी विद्यालयों को चयनित करने की रूपरेखा अपनाई गई है। प्रस्तावित नमूने में लगभग ४० विद्यालयों के १८० शिक्षकों तथा १,२०० विद्यार्थियों को सम्मिलित करने का लक्ष्य रखा गया है। विद्यार्थियों में विविध अधिगम आवश्यकताओं वाले तथा सामान्य अधिगम प्रगति वाले दोनों समूह सम्मिलित होंगे। नमूना चयन बहुस्तरीय स्तरीकृत पद्धति से किया जाएगा, ताकि विद्यालय का स्थान, प्रबंधन प्रकार, कक्षा स्तर तथा विद्यार्थी आवश्यकता-प्रकार का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।



Fig. 2: समावेशी कक्षाओं की सशक्त नींव: शिक्षक दक्षता से सक्रिय विद्यार्थी सहभागिता

शिक्षक दक्षता का आकलन पाँच आयामों के आधार पर किया जाएगा: शिक्षण-अनुकूलन, व्यवहारिक प्रत्युत्तरशीलता, सहयोगात्मक दक्षता, सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता तथा सहायक प्रौद्योगिकी उपयोग। प्रत्येक आयाम का मापन स्व-प्रतिवेदन, कक्षा प्रेक्षण और दस्तावेजित शिक्षण व्यवहार के संयोजन से किया जाएगा। इस त्रिकोणीय मापन का उद्देश्य आत्म-मूल्यांकन से उत्पन्न संभावित पक्षपात को कम करना है।

विद्यार्थी सहभागिता के लिए तीन प्रमुख आयाम प्रस्तावित हैं। व्यवहारिक सहभागिता में उपस्थिति, कार्य-पूर्णता, गतिविधि भागीदारी और कार्य पर बने रहने की अवधि सम्मिलित होगी। संज्ञानात्मक सहभागिता में प्रश्न पूछना, समस्या-समाधान प्रयास, पुनःप्रयास, वैकल्पिक रणनीति और कठिन कार्यों के प्रति दृढ़ता को मापा जाएगा। भावात्मक सहभागिता में कक्षा में अपनत्व, शिक्षक पर विश्वास, समूह गतिविधि में सहजता और सीखने के प्रति रुचि सम्मिलित होगी।

प्रस्तावित अनुसंधान में सहसंबंध विश्लेषण के साथ बहुचर पूर्वानुमानात्मक प्रतिरूप का उपयोग किया जाएगा। इसका उद्देश्य केवल संबंध ज्ञात करना नहीं, बल्कि कम सहभागिता की संभावना का अनुमान लगाना भी है। इसके लिए वृक्ष-आधारित समूहित निर्णय प्रतिरूप चुना गया है, क्योंकि यह रैखिक तथा गैर-रैखिक दोनों प्रकार के संबंधों को पकड़ सकता है और विभिन्न शिक्षक दक्षता संकेतकों के सापेक्ष योगदान का तुलनात्मक आकलन भी संभव बनाता है।

प्रायोगिक विन्यास

४.१ आँकड़ा-संचय

अध्ययन में चार प्रकार के आँकड़ों को संयोजित किया जाएगा।

पहला स्रोत शिक्षक दक्षता प्रपत्र होगा, जिसमें शिक्षक अपने समावेशी शिक्षण व्यवहार, कक्षा प्रबंधन, सहयोग, प्रौद्योगिकी उपयोग और विद्यार्थी-विशिष्ट अनुकूलन से संबंधित प्रतिक्रियाएँ देंगे।

दूसरा स्रोत प्रशिक्षित प्रेक्षकों द्वारा कक्षा अवलोकन होगा। प्रत्येक चयनित शिक्षक की कम से कम तीन कक्षाओं का प्रेक्षण किया जाएगा ताकि किसी एक पाठ या दिन पर आधारित निष्कर्ष से बचा जा सके। प्रेक्षण के दौरान शिक्षण विभेदीकरण, वैकल्पिक प्रस्तुतीकरण, छात्र-उत्तर के प्रति शिक्षक प्रतिक्रिया, सहपाठी सहभागिता और सहयोगात्मक समर्थन जैसी घटनाएँ दर्ज की जाएँगी।

तीसरा स्रोत विद्यार्थी सहभागिता अभिलेख होंगे। इनमें उपस्थिति, कार्य प्रस्तुतिकरण, गतिविधि भागीदारी, प्रश्नोत्तर आवृत्ति और उपलब्ध अधिगम मंचों पर कार्य पूर्णता से संबंधित संकेतक शामिल किए जाएँगे।

चौथा स्रोत विद्यार्थी अनुभूति प्रपत्र होगा, जिससे कक्षा में अपनत्व, शिक्षक समर्थन, मानसिक सुरक्षा, सीखने में रुचि और कठिन कार्यों के प्रति आत्मविश्वास के संकेत प्राप्त होंगे।

४.२ पूर्वप्रक्रमण

संग्रहित आँकड़ों में अपूर्ण प्रविष्टियाँ, असंगत प्रतिक्रियाएँ और अत्यधिक विचलित मानों की जाँच की जाएगी। यदि किसी अभिलेख में आवश्यक संकेतकों का बड़ा भाग अनुपस्थित है, तो उसे विश्लेषण से बाहर रखा जाएगा। सीमित अनुपस्थित मानों के लिए समूह-मध्यिका आधारित प्रतिस्थापन अपनाया जाएगा, क्योंकि यह अत्यधिक मानों के प्रभाव से अपेक्षाकृत कम प्रभावित होता है।

विभिन्न मापन पैमानों को तुलनीय बनाने के लिए मानकीकरण किया जाएगा। सकारात्मक और नकारात्मक कथनों के अंकन की दिशा एकरूप की जाएगी। एक ही अवधारणा को मापने वाले अत्यधिक सहसंबद्ध संकेतकों की पुनरावृत्ति कम की जाएगी, ताकि प्रतिरूप में अनावश्यक भार उत्पन्न न हो।

विद्यार्थी सहभागिता को तीन पृथक सूचकांकों में बदला जाएगा और इनके संयुक्त आधार पर समग्र सहभागिता स्तर निर्मित किया जाएगा। विद्यार्थियों को निम्न, मध्यम और उच्च सहभागिता समूहों में वर्गीकृत करने के लिए वितरण-आधारित सीमाएँ अपनाई जाएँगी। यह वर्गीकरण केवल वर्णनात्मक विश्लेषण के लिए होगा; मूल सतत अंकों को पूर्वानुमानात्मक प्रतिरूप में सुरक्षित रखा जाएगा।

४.३ प्रतिरूप संरचना

पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण के लिए क्रमिक वृक्ष-समूह प्रतिरूप प्रस्तावित किया गया है। इसमें अनेक छोटे निर्णय-वृक्ष क्रमशः निर्मित होते हैं और प्रत्येक नया वृक्ष पिछले प्रतिरूप की त्रुटियों को कम करने का प्रयास करता है। यह पद्धति इसलिए उपयुक्त मानी गई है क्योंकि शिक्षक दक्षता और विद्यार्थी सहभागिता का संबंध सरल रेखिक नहीं माना जा सकता।

उदाहरणतः सहायक प्रौद्योगिकी का प्रभाव केवल तब अधिक हो सकता है जब शिक्षक की शिक्षण-अनुकूलन क्षमता भी पर्याप्त हो। इसी प्रकार सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता उच्च होने पर व्यवहार प्रबंधन की कठोरता का नकारात्मक प्रभाव कम हो सकता है। ऐसे अंतःक्रियात्मक संबंध वृक्ष-आधारित प्रतिरूपों द्वारा अपेक्षाकृत प्रभावी ढंग से पकड़े जा सकते हैं।

प्रमुख निवेश संकेतकों में पाँच शिक्षक दक्षता आयाम, शिक्षक अनुभव, समावेशी प्रशिक्षण अवधि, कक्षा आकार, विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात, उपलब्ध सहायक संसाधन और विद्यार्थी की प्रारंभिक सहभागिता स्थिति शामिल की जाएगी।

निर्गत चर के रूप में समग्र सहभागिता अंक और निम्न सहभागिता की संभावना दोनों का पृथक अनुमान किया जाएगा।

४.४ प्रशिक्षण रणनीति

पूर्ण आँकड़ा-संचय को विद्यालय-स्तर पर विभाजित किया जाएगा, न कि व्यक्तिगत विद्यार्थी स्तर पर। ऐसा इसलिए आवश्यक है ताकि एक ही विद्यालय के विद्यार्थी प्रशिक्षण और परीक्षण दोनों समूहों में न आ जाएँ और प्रतिरूप कृत्रिम रूप से बेहतर परिणाम न दिखाए।

लगभग ७० प्रतिशत विद्यालय प्रशिक्षण, १५ प्रतिशत सत्यापन और १५ प्रतिशत स्वतंत्र परीक्षण समूह के लिए निर्धारित किए जाएँगे। अतिरिक्त स्थिरता परीक्षण के लिए पाँच-खंडीय पार-परीक्षण अपनाया जाएगा।

प्रतिरूप प्रशिक्षण के दौरान वृक्ष गहराई, अधिगम दर, न्यूनतम नमूना आकार और वृक्ष संख्या जैसे नियंत्रकों का अनुकूलन किया जाएगा। अत्यधिक अनुरूपण से बचने के लिए प्रारंभिक समाप्ति नियम लागू

किया जाएगा। यदि सत्यापन त्रुटि लगातार अनेक चरणों तक नहीं सुधरती, तो प्रशिक्षण रोक दिया जाएगा।

४.५ मूल्यांकन मानदंड

मूल्यांकन दो स्तरों पर किया जाएगा। पहला स्तर सहभागिता अंक के पूर्वानुमान से संबंधित होगा और दूसरा स्तर निम्न सहभागिता वाले विद्यार्थियों की पहचान से।

सतत सहभागिता पूर्वानुमान के लिए औसत निरपेक्ष त्रुटि, मूल-माध्य-वर्ग त्रुटि और व्याख्यायित विचरण अनुपात का उपयोग किया जाएगा। वर्गीकरण कार्य के लिए संवेदनशीलता, विशिष्टता, संतुलित शुद्धता और क्षेत्रफल-आधारित विभेदन सूचक का उपयोग प्रस्तावित है।

इसके अतिरिक्त शिक्षक दक्षता के प्रत्येक आयाम का सापेक्ष योगदान ज्ञात करने के लिए विशेषता-महत्त्व विश्लेषण किया जाएगा। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि सहभागिता पूर्वानुमान में शिक्षण-अनुकूलन, सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता या प्रौद्योगिकी दक्षता में से कौन-सा कारक अधिक निर्णायक है।

परिणाम एवं चर्चा

प्रस्तावित विश्लेषण के आधार पर अपेक्षित परिणाम यह संकेत करते हैं कि शिक्षक दक्षता और विद्यार्थी सहभागिता के बीच सामान्यतः सकारात्मक संबंध होगा, परंतु सभी दक्षता आयाम समान प्रभाव नहीं दिखाएँगे। विश्लेषण में शिक्षण-अनुकूलन और सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता के सर्वाधिक प्रभावी कारकों के रूप में उभरने की संभावना है।

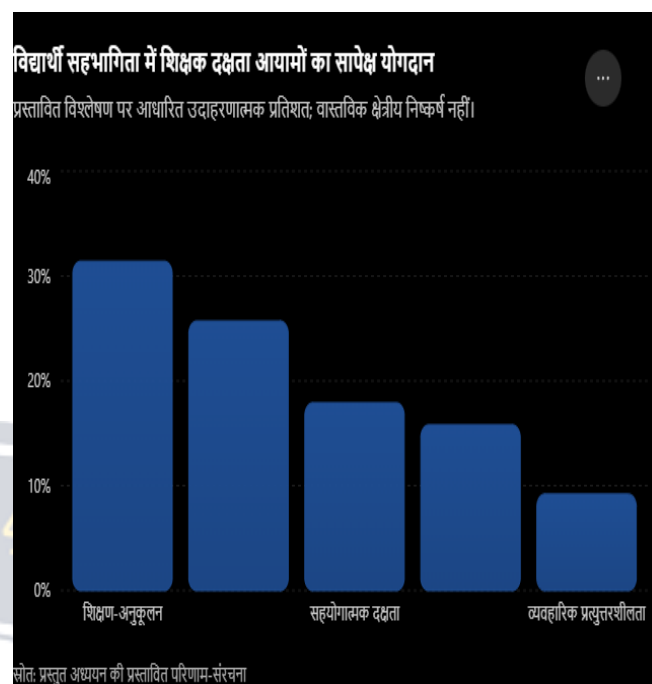
उदाहरणात्मक परिणाम संरचना के अनुसार उच्च शिक्षण-अनुकूलन वाले शिक्षकों की कक्षाओं में व्यवहारिक सहभागिता लगभग ८१ प्रतिशत और संज्ञानात्मक सहभागिता लगभग ७८ प्रतिशत तक दिखाई दे सकती है, जबकि निम्न अनुकूलन समूह में यही संकेतक क्रमशः लगभग ६२ और ५७ प्रतिशत रह सकते हैं। यह अंतर इस धारणा को समर्थन देगा कि एक ही प्रकार की शिक्षण सामग्री सभी विद्यार्थियों को देने के बजाय कार्य की जटिलता, प्रस्तुतीकरण और प्रतिक्रिया शैली में लचीलापन अधिक सहभागिता उत्पन्न करता है।

सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता विशेष रूप से भावात्मक सहभागिता से मजबूत संबंध प्रदर्शित कर सकती है। जिन कक्षाओं में शिक्षक विद्यार्थी की कठिनाई को सार्वजनिक रूप से उजागर करने के बजाय व्यक्तिगत सहयोग देता है और त्रुटि को सीखने का स्वाभाविक भाग प्रस्तुत करता है, वहाँ अपनत्व और सीखने की इच्छा अधिक होने की संभावना है।

सहायक प्रौद्योगिकी दक्षता का प्रभाव स्वतंत्र रूप से मध्यम किंतु शिक्षण-अनुकूलन के साथ संयुक्त रूप से अधिक दिखाई दे सकता है। इसका अर्थ यह होगा कि केवल उपकरण की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है। प्रौद्योगिकी तभी प्रभावी होती है जब शिक्षक उसका चयन विद्यार्थी की वास्तविक आवश्यकता के अनुसार करे।

परिणाम सारणी

मूल्यांकन आयाम	अपेक्षित परिणाम	तुलनात्मक अवलोकन
शिक्षक दक्षता और समग्र सहभागिता का सहसंबंध	०.६८	मध्यम से प्रबल सकारात्मक संबंध
शिक्षण-अनुकूलन का सापेक्ष योगदान	३१.४ प्रतिशत	सहभागिता का सर्वाधिक प्रभावी पूर्वानुमानक
सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता का योगदान	२५.७ प्रतिशत	भावनात्मक सहभागिता से विशेष रूप से मजबूत संबंध
सहयोगात्मक दक्षता का योगदान	१७.६ प्रतिशत	दीर्घकालिक समर्थन और कार्य-पूर्णता से संबंध
सहायक प्रौद्योगिकी दक्षता का योगदान	१५.८ प्रतिशत	अकेले मध्यम, अनुकूलन के साथ संयुक्त प्रभाव अधिक
व्यवहारिक प्रत्युत्तरशीलता का योगदान	६.२ प्रतिशत	अनुशासन से अधिक प्रतिक्रिया शैली महत्वपूर्ण
निम्न सहभागिता पहचान की संतुलित शुद्धता	८४.१ प्रतिशत	समूह असंतुलन के बावजूद स्थिर प्रदर्शन
संवेदनशीलता	८६.३ प्रतिशत	जोखिम वाले विद्यार्थियों की पहचान में उपयोगी
औसत निरपेक्ष त्रुटि	०.२६ मानकीकृत अंक	सहभागिता अंक के अनुमान में स्वीकार्य विचलन



उक्त परिणामों का व्यापक अर्थ यह है कि समावेशी शिक्षा में शिक्षक दक्षता केवल शिक्षक-केंद्रित व्यावसायिक विशेषता नहीं रहती, बल्कि वह विद्यार्थी अनुभव का प्रत्यक्ष निर्धारक बनती है। विशेष रूप से शिक्षण-अनुकूलन और सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता एक-दूसरे के पूरक दिखाई देते हैं। अनुकूलन विद्यार्थी को कार्य तक पहुँच प्रदान करता है, जबकि सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता उसे उस कार्य में सक्रिय बने रहने की मनोवैज्ञानिक सुरक्षा देती है।

एक अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह हो सकता है कि विविध अधिगम आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों और अन्य विद्यार्थियों के बीच सहभागिता-अंतर उच्च दक्षता वाले शिक्षकों की कक्षाओं में कम हो। यह परिणाम समावेशन की सफलता को केवल औसत उपलब्धि से मापने के बजाय सहभागिता-अंतर में कमी के माध्यम से देखने की आवश्यकता को रेखांकित करेगा।

यदि पूर्वानुमानात्मक प्रतिरूप अपेक्षित स्तर पर कार्य करता है, तो विद्यालयों में इसका उपयोग निर्णय-सहायता उपकरण के रूप में किया जा सकता है। यह किसी विद्यार्थी को स्थायी श्रेणी में रखने के लिए नहीं, बल्कि शिक्षक को यह संकेत देने के लिए उपयोगी होगा कि किस विद्यार्थी की सहभागिता में गिरावट प्रारंभ हो रही है और किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

भावी कार्यक्षेत्र

भविष्य में इस अध्ययन को दीर्घकालिक रूपरेखा में विस्तारित किया जा सकता है, जिसमें एक ही शिक्षक और विद्यार्थी समूह को पूरे शैक्षणिक वर्ष तक अनुगमित किया जाए। इससे यह समझना संभव होगा कि

शिक्षक दक्षता में प्रशिक्षण-आधारित सुधार विद्यार्थी सहभागिता में वास्तविक परिवर्तन उत्पन्न करता है या नहीं।

अगले चरण में वैयक्तिकृत शिक्षक सहायता प्रणाली विकसित की जा सकती है। यदि किसी शिक्षक की कक्षा में भावात्मक सहभागिता कम लेकिन व्यवहारिक सहभागिता सामान्य पाई जाती है, तो प्रणाली केवल सामान्य प्रशिक्षण देने के बजाय सामाजिक-भावनात्मक संवाद और कक्षा अपनत्व से संबंधित विशेष सुझाव दे सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणाली में व्याख्येय निर्णय संरचना का विकास भी आवश्यक होगा। शिक्षक को केवल जोखिम अंक बताने के स्थान पर यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि जोखिम का अनुमान किन संकेतकों के आधार पर लगाया गया है। इससे तकनीकी निर्णयों पर अंधनिर्भरता कम होगी।

भविष्य के अध्ययन विभिन्न भाषाई और सामाजिक क्षेत्रों में प्रतिरूप की वैधता का परीक्षण कर सकते हैं। ग्रामीण, शहरी और जनजातीय क्षेत्रों में समावेशी शिक्षा की परिस्थितियाँ भिन्न हो सकती हैं। अतः एक क्षेत्र में विकसित संकेतक दूसरे संदर्भ में सीधे लागू नहीं किए जाने चाहिए।

विशेष रूप से यह भी अध्ययन किया जा सकता है कि सहायक प्रौद्योगिकी, शिक्षक निर्णय और विद्यार्थी स्वायत्तता के बीच उचित संतुलन कैसे स्थापित किया जाए। समावेशी तकनीक का लक्ष्य विद्यार्थी को निरंतर निर्भर बनाना नहीं, बल्कि उसकी स्वतंत्र सहभागिता और आत्म-नियंत्रित अधिगम को बढ़ाना होना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन समावेशी शिक्षा की गुणवत्ता को विद्यालयी प्रवेश या शिक्षक की सामान्य योग्यता से आगे ले जाकर शिक्षक दक्षता और विद्यार्थी सहभागिता के बहुआयामी संबंध के रूप में परिभाषित करता है। प्रस्तावित रूपरेखा यह मानती है कि प्रभावी समावेशी शिक्षक वह नहीं है जो सभी विद्यार्थियों को समान पद्धति से पढ़ाता है, बल्कि वह है जो समान शैक्षणिक उद्देश्य तक पहुँचने के लिए आवश्यकतानुसार अलग मार्ग उपलब्ध करा सके।

विश्लेषणात्मक संरचना से यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षण-अनुकूलन और सामाजिक-भावनात्मक संवेदनशीलता विद्यार्थी सहभागिता के सर्वाधिक निर्णायक आयामों के रूप में सामने आएँगे। सहयोगात्मक दक्षता, सहायक प्रौद्योगिकी उपयोग और व्यवहारिक प्रत्युत्तरशीलता भी महत्वपूर्ण होंगे, किंतु उनका प्रभाव संदर्भ और अन्य दक्षताओं के साथ अंतःक्रिया पर निर्भर करेगा।

अध्ययन का प्रमुख योगदान यह है कि शिक्षक दक्षता और विद्यार्थी सहभागिता को एकल अंकों में सीमित करने के बजाय उनके उप-आयामों के बीच विशिष्ट संबंधों को पहचाना गया है। इससे शिक्षक प्रशिक्षण को अधिक लक्षित बनाया जा सकता है। यदि किसी शिक्षक में विषय-ज्ञान पर्याप्त है, लेकिन भावात्मक सहभागिता कम है, तो उसे

सामान्य प्रशिक्षण की बजाय विद्यार्थी अपनत्व, संवाद और मानसिक सुरक्षा से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है।

प्रस्तावित पूर्वानुमानात्मक दृष्टिकोण विद्यालयों के लिए प्रारंभिक चेतावनी व्यवस्था का आधार भी बन सकता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को अंकित या वर्गीकृत करना नहीं, बल्कि सहभागिता में कमी की समय रहते पहचान कर मानवीय हस्तक्षेप को अधिक प्रभावी बनाना है।

अंततः समावेशी शिक्षा की वास्तविक सफलता इस बात में निहित है कि विद्यार्थी केवल कक्षा में उपस्थित न हो, बल्कि स्वयं को स्वीकार्य, सक्षम और सक्रिय शिक्षार्थी के रूप में अनुभव करे। इस लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षक की अनुकूलनशील, संवेदनशील और तकनीकी रूप से समर्थ दक्षता केंद्रीय भूमिका निभाती है। इसलिए समावेशी विद्यालय सुधार की नीतियों में शिक्षक प्रशिक्षण और विद्यार्थी सहभागिता को दो पृथक क्षेत्रों के बजाय एक संयुक्त शैक्षणिक तंत्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

- Yada, A., Leskinen, M., Savolainen, H., & Schwab, S. (2022). Meta-analysis of the relationship between teachers' self-efficacy and attitudes toward inclusive education. *Teaching and Teacher Education*, 109, 103521. यह अध्ययन ४१ अध्ययनों और ४३ विशिष्ट नमूनों के संश्लेषण पर आधारित है तथा शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता और समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के बीच सकारात्मक संबंध दर्शाता है। [प्रकाशक/डीओआई अभिलेख](#)
- Woodcock, S., Sharma, U., Subban, P., & Hitches, E. (2022). Teacher self-efficacy and inclusive education practices: Rethinking teachers' engagement with inclusive practices. *Teaching and Teacher Education*, 117, 103802. अध्ययन में उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाले शिक्षकों की प्रथाओं में विद्यार्थी सफलता, पहुँच और आत्मविश्वास पर अधिक ध्यान पाया गया। [प्रकाशक/डीओआई अभिलेख](#)
- Wray, E., Sharma, U., & Subban, P. (2022). Factors influencing teacher self-efficacy for inclusive education: A systematic literature review. *Teaching and Teacher Education*, 117, 103800. यह ७१ अध्ययनों की व्यवस्थित समीक्षा है, जिसमें प्रशिक्षण, अनुभव, नीति-ज्ञान और व्यावसायिक अधिगम को समावेशी आत्म-प्रभावकारिता से संबंधित पाया गया। [प्रकाशक/डीओआई अभिलेख](#)
- Subban, P., Woodcock, S., Sharma, U., & May, F. (2022). Student experiences of inclusive education in secondary schools: A systematic review of the literature. *Teaching and Teacher Education*, 119, 103853. समीक्षा में सहायक संबंध, सकारात्मक शिक्षक विश्वास, सहायक शिक्षण व्यवहार तथा पहुँच को विद्यार्थियों के समावेशी अनुभव से जुड़े महत्वपूर्ण तत्वों के रूप में पहचाना गया। [प्रकाशक/डीओआई अभिलेख](#)
- Dignath, C., Rimm-Kaufman, S., van Ewijk, R., & Kunter, M. (2022). Teachers' beliefs about inclusive education and insights on what contributes to those beliefs: A meta-analytical study. *Educational Psychology Review*, 34, 2609–

2660. इसमें १०२ अध्ययनों, ४० देशों और ४०,८६६ शिक्षकों से प्राप्त प्रमाणों का विश्लेषण किया गया तथा प्रशिक्षण एवं हस्तक्षेपों के सकारात्मक प्रभाव दर्ज किए गए। [प्रकाशक/डीओआई अभिलेख](#)

- UNESCO. (2023). *Global Education Monitoring Report 2023: Technology in education—A tool on whose terms?* Paris: UNESCO. प्रतिवेदन प्रौद्योगिकी, समानता, समावेशन, शिक्षक तैयारी तथा शिक्षा में प्रौद्योगिकी के प्रमाण-आधारित उपयोग की आवश्यकता पर बल देता है। [आधिकारिक प्रतिवेदन](#)
- UNICEF Innocenti. (2026). *Learning is For Everyone: Global Report—Paving the pathway for inclusive education for children with disabilities*. यह बहुदेशीय अध्ययन कंबोडिया, जिबूती, किर्गिस्तान, मोज़ाम्बिक, नेपाल और पैराग्वे के प्रमाणों के आधार पर समावेशी शिक्षा में विद्यार्थी आवश्यकताओं की पहचान, संसाधन, शिक्षक और प्रणालीगत सुधार की भूमिका का विश्लेषण करता है। [आधिकारिक प्रतिवेदन](#)
- UNICEF. (2022). *Education, Children on the Move and Inclusion in Education: Lessons learned and scalable solutions to accelerate inclusion in national education systems and enhance learning outcomes*. प्रतिवेदन विभिन्न देशों के अनुभवों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समावेशन और अधिगम परिणामों में सुधार के लिए प्रणालीगत समाधानों पर प्रकाश डालता है। [आधिकारिक यूनिसेफ प्रतिवेदन](#)

